अध्याय

15

मेघ आए

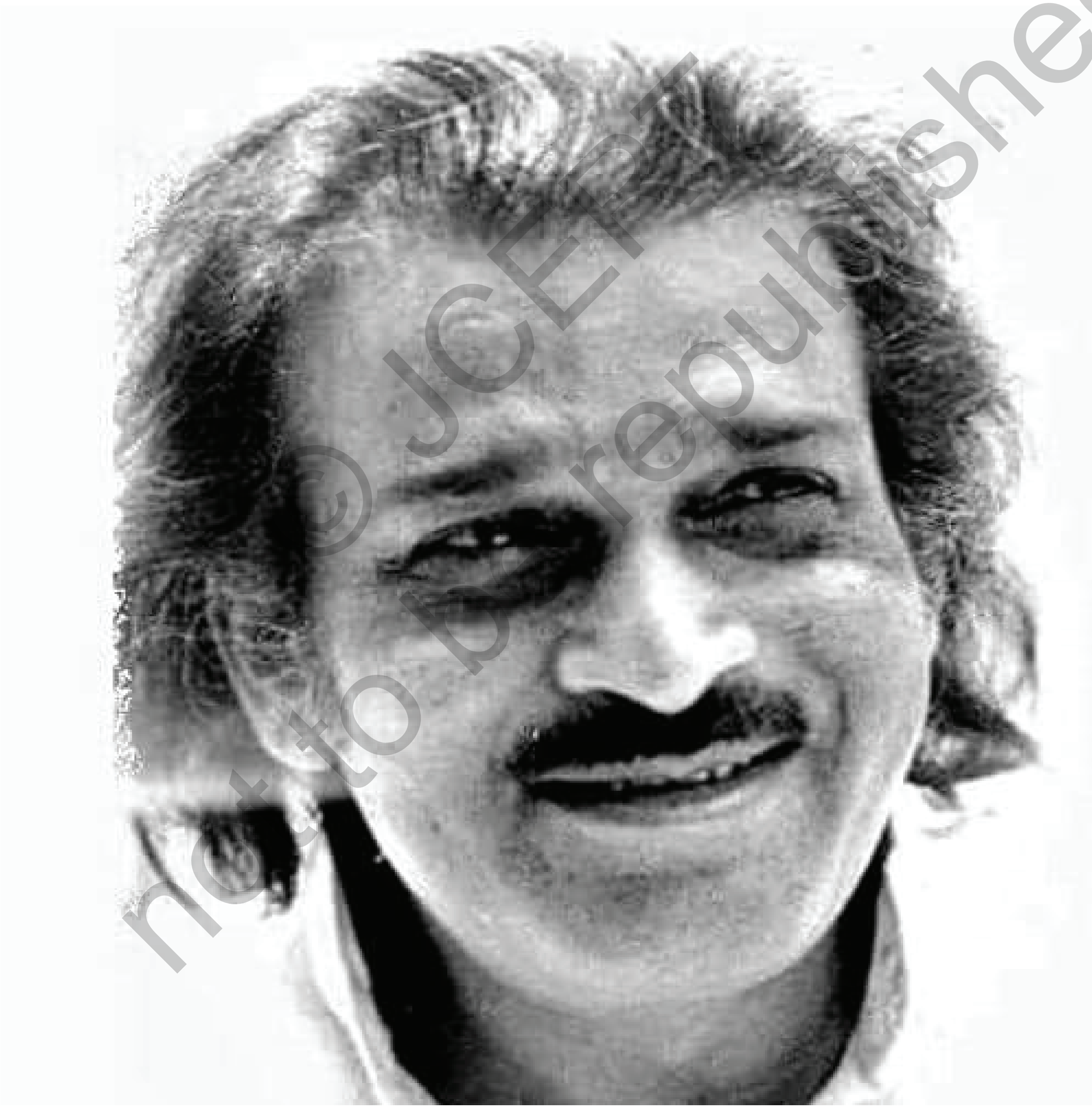

© JCERT not to be republished

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

1. कवि परिचय

कवि परिचय

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
- जीवन- परिचय। जन्म- 15 सितम्बर 1927। जन्म स्थान- जिला बस्ती, उत्तर प्रदेश। मृत्यु- 23 सितम्बर 1983। स्थान- नई दिल्ली
- साहित्यिक परिचय
- काव्य- संग्रह
  काठ की घंटियाँ, बाँस के पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूंटियों पर टंगे लोग
- कहानी- संग्रह
  पागल कुत्तों का मसीहा, अंधेरे पर अंधेरा
- नाटक:-
  बकरी, लड़ाई, कल भात आएगा
- 'खूंटियों पर टंगे लोग' काव्य:- संग्रह पर सन्-1983 ई में साहित्य अकादमी सम्मान
- संपादन- दिनमान (चरचे और चरखे)

© JCERT not to be republished

2. पाठ परिचय

पाठ परिचय

- पाठ परिचय
- 'मेघ आए 'शीर्षक कविता में प्रकृति का अत्यंत चित्ताकर्षक वर्णन हुआ है।
- मेघ को मेहमान (दामाद) के समान बताया गया है।
- पूरे सालभर के इंतजार के बाद जब बादल आए तो लोग उसी प्रकार स्वागत करने लगे जिस प्रकार कोई अपने दामाद का स्वागत करता है।
- हवा चंचल बालिका की तरह नाच-गाकर उनका स्वागत कर रही है।
- मेघों को देखने के लिए पूरा गाँव उतावला हो गया है इसलिए अपने-अपने घरों की खिड़कियाँ और दरवाजे खोल दिए हैं।
- आँधी चली और धूल इधर-उधर भागने लगी मानो कोई गाँव की लड़की अपना घाघरा उठाकर घर की तरफ भाग चली।
- गाँव की नदी भी एक प्रेमिका की तरह अपने मेहमान मेघों को देखकर ठिठक गई और तिरछी नजर से देखने लगी।
- बादल रुपी मेहमान का गाँव के प्रवेश द्वार पर ही पीपल ने एक बड़े-बूढे बुजुर्ग की तरह झुककर उनका स्वागत किया।

© JCERT not to be republished

पाठ परिचय

साल भर की गर्मी सहकर मुरझाई लता दरवाजे के पीछे चिपकी खड़ी थी जैसे कोई नायिका आने वाले को उलाहना दे रही हो कि पूरा साल भर बिता कर आए हो।

'तालाब भी पानी से लबालब भरा हुआ ऐसा लहरा रहा था कि मानो वह बादलों के स्वागत के लिए परात में पानी भरकर लाया हो।

चारों ओर बादल गरजने लगे, बिजली चमकने लगी और झर-झर पानी बरसने लगा। कोई कहने लगा कि मेरा भ्रम अब टूट गया।

मेघ रूपी मेहमान को लता रूपी अपनी प्रिया से मिलते देखकर पूरी प्रकृति खुश हो गई। सभी खुश हुए। वर्षा रूपी खुशी के आँसू बहने लगे।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

काव्यांश – 1

मेघ आए बड़े बन-ठन के संवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के संवर के

शब्दार्थ- मेघ = बादल, बन-ठन कर = सज-धज कर, बयार = हवा, पाहुन = मेहमान (दामाद)

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज 'भाग -1 में संकलित 'मेघ आए' शीर्षक कविता से ली गई है। इसके कवि नई कविता के प्रमुख कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं। इन पंक्तियों में बादलों के आगमन से ग्रामीण परिवेश में फैली प्रसन्नता का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि जिस प्रकार से पाहुन अर्थात् दामाद बहुत तैयारी के साथ बन-ठन कर, सज-सँवर कर अपनी ससुराल जाता है, ठीक उसी प्रकार मेघ बड़े बन-ठन कर, सज-सँवर कर अपनी आकाश रूपी ससुराल आया है। उसके स्वागत में हवा नाचती-गाती हुई आगे-आगे चल रही है। पूरे गाँव के लोग उस पाहुन को घर के दरवाजे, खिड़कियाँ खोल कर देख रहे हैं। इन दृश्यों को देखकर ऐसा लगता है जैसे गाँव में शहर के पाहुन आए हों।

विशेष-

*प्राकृतिक वातावरण का मनमोहक वर्णन किया गया है ।
*ग्रामीण क्षेत्र में किसी अतिथि के आगमन पर जो प्रसन्नता होती है, उसे बताने की कोशिश की गई है।
*साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है।
*मानवीकरण एवं उत्प्रेक्षा अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग किया गया है ।

© JCERT not to be republished

काव्यांश -2

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ- बाँकी = टेढ़ापन, वक्रता। चितवन = प्रेमपूर्वक देखने का ढंग, दृष्टि। घाघरा = चुननदार तथा बड़े घेरे वाला पहनावा जो स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं। ठिठक = चलते-चलते एक बारगी ठहर या रुक जाना।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित 'मेघ आए' शीर्षक कविता से लिया गया है। इन पंक्तियों में मेघ के आने पर प्रकृति में हुई हलचल का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- मेघों के आने की सूचना हवा से मिलते ही पेड़ खुशी से झूम उठे। वे पाहुन को देखने के प्रयत्न में कभी गर्दन ऊँची कर रहे हैं तो कभी झुक कर एक झलक पाने को बेताब हो रहे हैं। आँधी चलने से गलियों की धूल उठकर अन्यत्र जाने लगी है मानो कि गाँव की कोई लड़की घाघरा उठाए तेज कदमों से घर की ओर भागी चली जा रही है। नदी भी एकाएक ठिठक कर तिरछी नजरों से उस पाहुन को देखने लगी जो, बन-ठन कर, सज-सँवरकर गांव में आया है ।

विशेष-

*मेघों के आगमन से प्रकृति में हुई हलचल का वर्णन किया गया है।
*पेड़, आँधी, धूल,नदी आदि का बड़ा सुंदर मानवीकरण किया गया है।
*झूक-झाँकने, बन-ठन में अनुप्रास अलंकार प्रयुक्त हुआ है।
*साधारण बोल-चाल की भाषा का प्रयोग किया गया है ।

© JCERT not to be republished

काव्यांश – 3

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं' -
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ- जुहार = अभिवादन। सुधि = स्मरण। अकुलाई = बेचैन। ओट = आड़। हरसाया = प्रसन्न हुआ। ताल = तालाब, पोखर। परात = थाली के आकार का ऊँचे किनारे वाला बड़ा बर्तन।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज भाग -1' में संकलित 'मेघ आए' शीर्षक कविता से ली गई है।
इन पंक्तियों में मेघों के आगमन पर बूढ़े पीपल के अभिवादन के साथ स्वागत एवं साल भर की गर्मी से व्यथित लता की प्रसन्नता एवं ताल- तलैया द्वारा मेघों के स्वागत का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि सजे -धजे मेहमान के रूप में आए बादल को देखकर बूढ़े पीपल ने गाँव के बुजुर्ग, सम्मानित व्यक्ति के रूप में सर्वप्रथम इस मेहमान का अभिवादन या स्वागत किया। गर्मी से व्याकुल लता दरवाज़े की ओट में खड़ी होकर उलाहना वाले लहजे में कहती है कि तुम्हें पूरे साल भर बाद मेरी याद आई। मेघ को सज-धज कर मेहमान के रूप में आए देखकर ताल-तलैया भी प्रसन्न हो उठा और परात में पानी भरकर (मेहमान के पैर धोने हेतु) लाया।

विशेष-
*सज-धज कर आए मेहमान का स्वागत बूढ़े पीपल के द्वारा किया गया है।
*लता की उलाहना प्रेम पूर्ण उलाहना है।
*पीपल ,लता तथा ताल -तलैया का सूक्ष्म मानवीकरण किया गया है।
*सामान्य बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया गया है ।

© JCERT not to be republished

काव्यांश – 4

क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की,
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ– क्षितिज = वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। अटारी = कोठा, अट्टालिका। दामिनि = आकाश में चमकने वाली बिजली। भरम = भ्रांति, संदेह। अश्रु = आंसू।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में संकलित 'मेघ आए' शीर्षक कविता से ली गई है।
इन पंक्तियों में पाहुन अर्थात् मेहमान का उसकी प्रिया से मिलन के पश्चात उत्पन्न परिस्थितियों का वर्णन किया गया है, जिसमें अब सारे भ्रम दूर हो गए हैं और दोनों की आंखों से अश्रु पात हो रहे हैं।

व्याख्या– विवेच्य पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि क्षितिज रूपी अटारी पर घने मेघ छाने लगे और उन घने मेघों के बीच बिजली चमकने लगी। अब तक लोगों को यह भ्रम था कि पता नहीं अबकी बार बादल आएँगे या नहीं। अबकी बार बरसेंगे या नहीं, परंतु बिजली चमकने से अब वह भ्रम दूर हो गया। साथ ही प्रवासी मेहमान के अटारी पर पहुँचते ही उसकी नायिका का भी भ्रम टूट गया। तब उसने मेहमान से कहा कि, "आपके आगमन को लेकर मेरे मन में जो भ्रम था अब वह मिट गया है आप मुझे माफ कर दें"। यह सुनते ही मेहमान के सब्र का बाँध टूट गया और उस मिलन बेला में प्रिय-प्रिया के नेत्रों से अश्रुपात होने लगा अर्थात् मूसलाधार वर्षा होने लगी।

विशेष–

*क्षितिज रुपी अटारी पर मेघ रुपी नायक का लता रुपी नायिका से मिलन हुआ।

*भ्रम की गाँठ खुलने से वर्षा हुई।

*भावाभिव्यक्ति के लिए विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया गया है।

*मानवीकरण,रुपक एवं अनुप्रास की अद्भूत छटा है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न 1. बादलों के आने पर प्रकृति में जिन गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर:- बादलों के आने पर प्रकृति में निम्न गतिशील क्रियाएँ हुई:-

*बयार नाचती-गाती चलने लगी।

*पेड़ झुकने लगे, मानो वे गरदन उचकाकर बादलों को निहार रहे हों।

*आँधी चलने लगी। धूल उठने लगी।

*नदी मानो बाँकी नज़र उठाकर ठिठक गई। पीपल का पेड़ झुकने लगा।

*लताएँ पेड़ों की शाखाओं में छिप गईं।

*तालाब जल से भर गए।

*क्षितिज पर बिजली चमकने लगी।

*मूसलाधार वर्षा होने लगी ।

प्रश्न 2. निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं?

धूल

पेड़

नदी

लता

ताल

उत्तर- नीचे दिए गए शब्द और उनके प्रतीक इस प्रकार हैं-

धूल- मेघ रूपी मेहमान के आगमन से उत्साहित अल्हड़ बालिका का प्रतीक है।

पेड़- गाँव के आम व्यक्ति का प्रतीक है जो मेहमान को देखने के लिए उत्सुक है।

नदी- गाँव की नवविवाहिता का प्रतीक है जो घूँघट की ओर से तिरछी नज़र से मेघ को देखती है।

लता- नवविवाहिता मानिनी नायिका का प्रतीक है जो अपने मायके में रहकर मेघ का इंतजार कर रही है।

ताल- घर के नवयुवक का प्रतीक है जो, मेहमान के पैर धोने के लिए पानी लाता है।

प्रश्न 3. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों ?

उत्तर- लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट में छिपकर देखा क्योंकि एक तो वह बादल रूपी अपने प्रियतम को देखने के लिए व्याकुल हो रही थी और लज्जावश सामने भी नहीं आ पा रही थी और दूसरी ओर वह बादलों को देरी से आने के कारण रूठी हुई भी थी।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की

(ख) बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

© JCERT not to be republished

उत्तर- (क) उपरोक्त पंक्तियों का भाव है कि साल भर बितने के बाद भी आसमान में कहीं बादलों के निशान नहीं थे। इससे लता रूपी नायिका के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया था कि मेरे प्रिय मुझसे मिलने नहीं आएँगे, परंतु आकाश में मेघों के आगमन से उसका यह भ्रम दूर हो गया और अब वह क्षमा माँगने लगी।

उत्तर- (ख) इन पंक्तियों का भाव यह है कि मेघ रूपी मेहमान को देखने के लिए नदी रूपी स्त्रियाँ ठिठक गईं और घूँघट को सरकाकर मेहमान को देखा।

प्रश्न 5. मेध रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर- मेघ के आने से बयार आगे-आगे चलने लगी, जिससे गली के दरवाजे और खिड़कियाँ खुलने लगी। पेड़ कभी गर्दन उचकाए तो कभी झुक कर देखने लगे। धूल घाघरा उठाकर घर के अंदर भागी। नदी बाँकी होकर बहने लगी। बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की। लता कीवार की ओट हो गई। ताल-तलैया लबालब भर गए। अंत में क्षितिज के अटारी पर प्रिया और प्रियतम का मिलन हुआ जिससे मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई।

प्रश्न 6 मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है ?

उत्तर:- मेघ साल भर बाद अपनी ससुराल जा रहा है। उसकी प्रतीक्षा में ससुराल के सभी लोग हैं। उसे वहाँ अपनी लता रुपी प्रिया से मिलना है। पूरे केन्द्र बिन्दु में मेघ ही है इसलिए वह बन ठन कर ससुराल गया है।

प्रश्न 7. कविता में आए मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोज कर लिखिए।

उत्तर:- कविता में आए मानवीकरण एवं रूपक अलंकार के उदाहरण इस प्रकार से हैं-

मानवीकरण –

*मेघ आए बन-ठन के सँवर के

*नाचती-गाती बयार चली

*पेड़ झुक झाँकने लगे *बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके

*बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की

*बोली अकुलाई लता

*हरसाया ताल लाया पानी परात भर के

रूपक अलंकार -

क्षितिज अटारी

दामिनि दमकी

प्रश्न 8. कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर:- कविता में गाँव के रीति-रिवाजों के माध्यम से वर्षा ॠतु का चित्रण किया गया है। इसके माध्यम से कवि ने गाँव की कुछ परंपराओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। जैसे-

1. दामाद चाहे किसी के भी घर आए हों लेकिन गाँव के सभी लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

© JCERT not to be republished

2 गाँव की स्त्रियाँ मेहमान से पर्दा करती हैं।

3 नायिका भी मेहमान के समक्ष घूँघट करती है।

4 सबसे बुजुर्ग आदमी को झुककर मेहमान का स्वागत करना पड़ता है।

5 मेहमान के आने पर वधू पक्ष के लोगों को दूल्हे के पैरों को पानी से धोना पड़ता है।

प्रश्न 9. कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान के आने का जो रोचक वर्णन किया है, उसे लिखिए।

उत्तर:- कविता में कवि ने आकाश में मेघा के आगमन तथा गाँव में दामाद के आगमन में काफी समानता बताई है । जब आकाश में मेघ घिरते हैं, तो गाँव के सभी लोग उत्साह के साथ उसके आने की खुशियाँ मनाते हैं। चुँकि मेघों के साथ हवा भी आती है, जिससे पेड़-पौधे हिलने-डुलने लगते हैं। नदियों तथा तालाबों के जल में भी हलचल होने लगती है। आकाश में बिजली चमकने लगती है और फिर झमाझम बारिश से पूरी धरती तृप्त हो जाती है।

ठीक उसी प्रकार गाँव में जब कोई दामाद आता है तो प्रकृति के समान ही गाँव के सभी सदस्य उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। स्त्रियाँ कीवाड़ की ओट से दामाद को देखने का प्रयत्न करती है। गाँव के बुजुर्ग उसका अभिवादन करते हैं। प्रिया भी लज्जा बस घुँघट में रहती है और जब अंततः प्रिय और प्रिया का मिलन होता है तो खुशी के आँसू गिरने लगते हैं।

प्रश्न 10. काव्य-सौंदर्य लिखिए-

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

उत्तर:-1 प्रस्तुत पंक्तियों में शहरी मेहमान को सज-धज कर ग्रामीण ससुराल आने की बात की गई है।

2 यहाँ मेघ को सज-धज कर आने से मेघ का मानवीकरण हुआ है।

3 मेघों का चित्रात्मक रुप वर्णित होने से एक दृश्य उपस्थित हो रहा है।

4 पाहुन जैसे ग्रामीण शब्दों के प्रयोग से रोचकता बढ़ गई है।

5 बन-ठन पद में न वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है ।

© JCERT not to be republished